सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

नाम	सूर्यकान्त त्रिपाठी
जन्मतिथि	11 फरवरी 1896
जन्म स्थान	मेदनीपुर
मृत्यु	15 अक्टूबर 1961
मृत्यु स्थान	इलाहाबाद
पिता का नाम	रामसहाय तिवारी
पत्नी का नाम	मनोहरा देवी

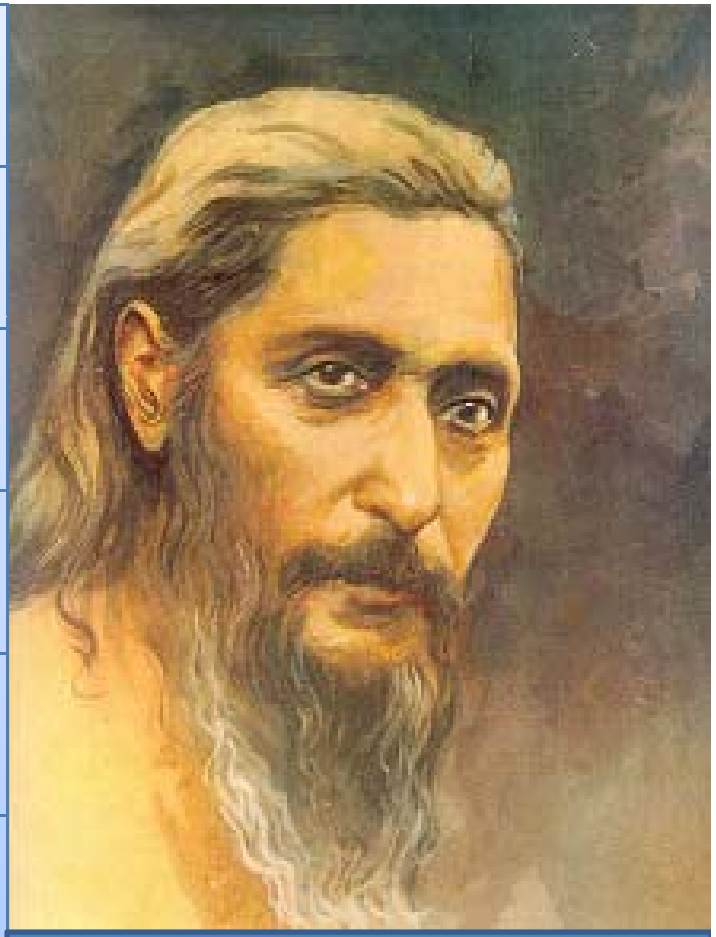

निराला

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

कविता संग्रह- परिमल, अनामिका, गीतिका, कुकुरमुत्ता, आदिमा, बेला, नये पत्त्ते, तुलसीदास, जन्मभूमि।
उपन्यास- अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरूपमा, चमेली, काले कारनामे।
निबन्ध संग्रह- प्रबन्ध-परिचय, प्रबन्ध प्रतिभा, प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संघर्ष।
अनुवाद- आनन्द मठ, विश्व-विकर्ष, कृष्ण कान्त का विल, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राज रानी

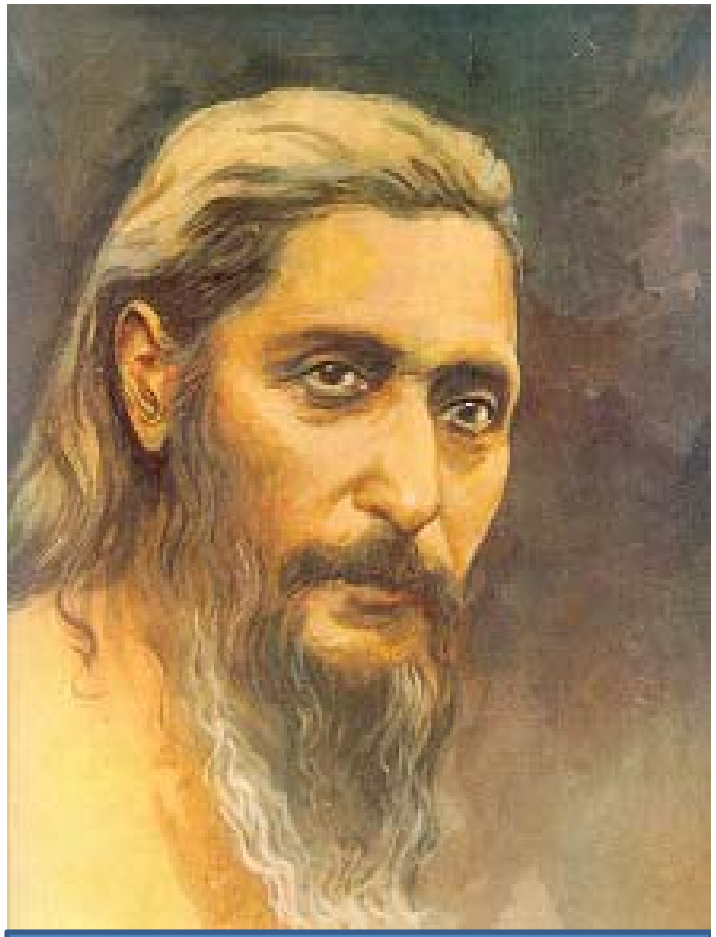

निराला

वह तोड़ती पत्थर- निराला

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई
स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार :-
सामने तरू-मालिका
अट्टालिका, प्राकार।

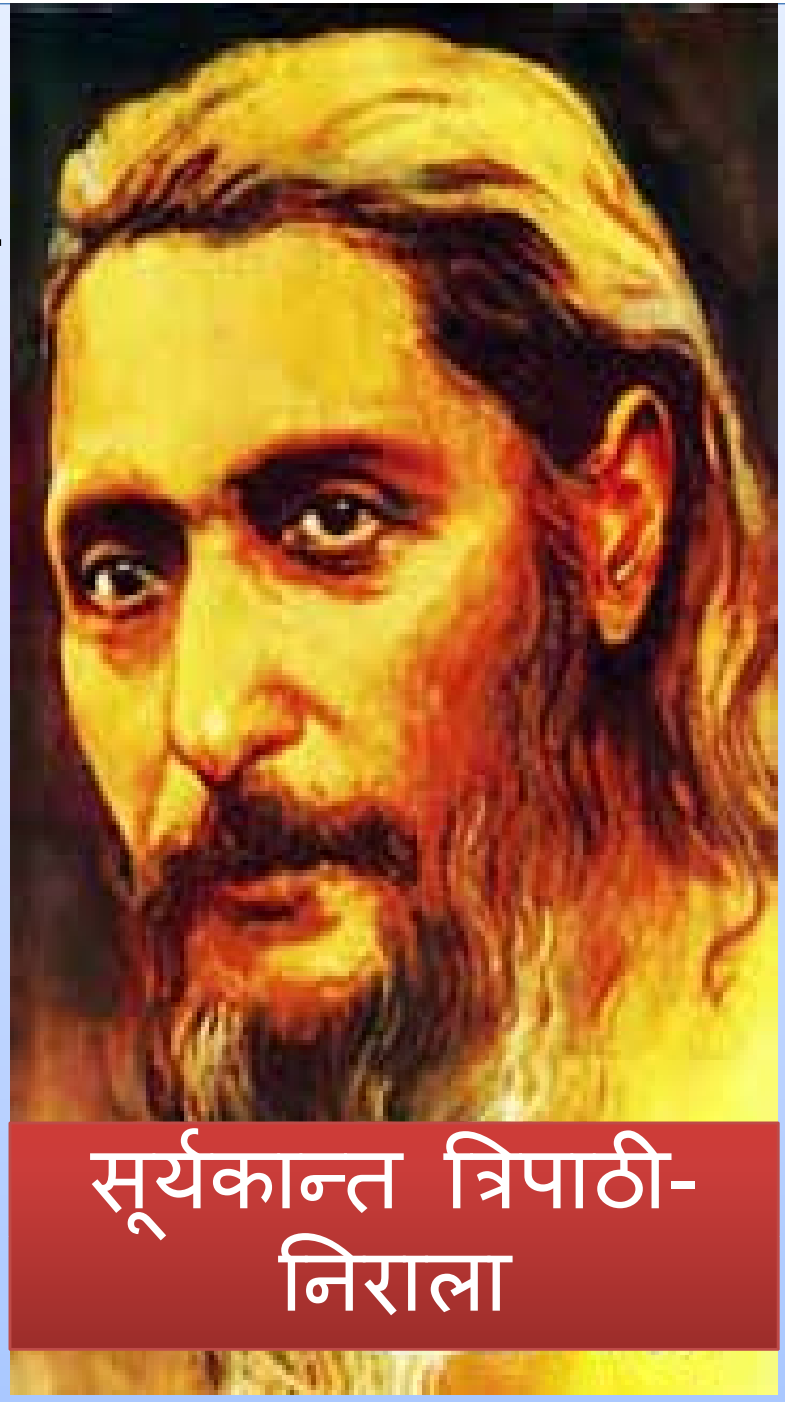

सूर्यकान्त त्रिपाठी-
निराला

वह तोड़ती पत्थर- निराला

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगी छा गयीं,
प्राय: हुई दुपहर :-

वह तोड़ती पत्थर।

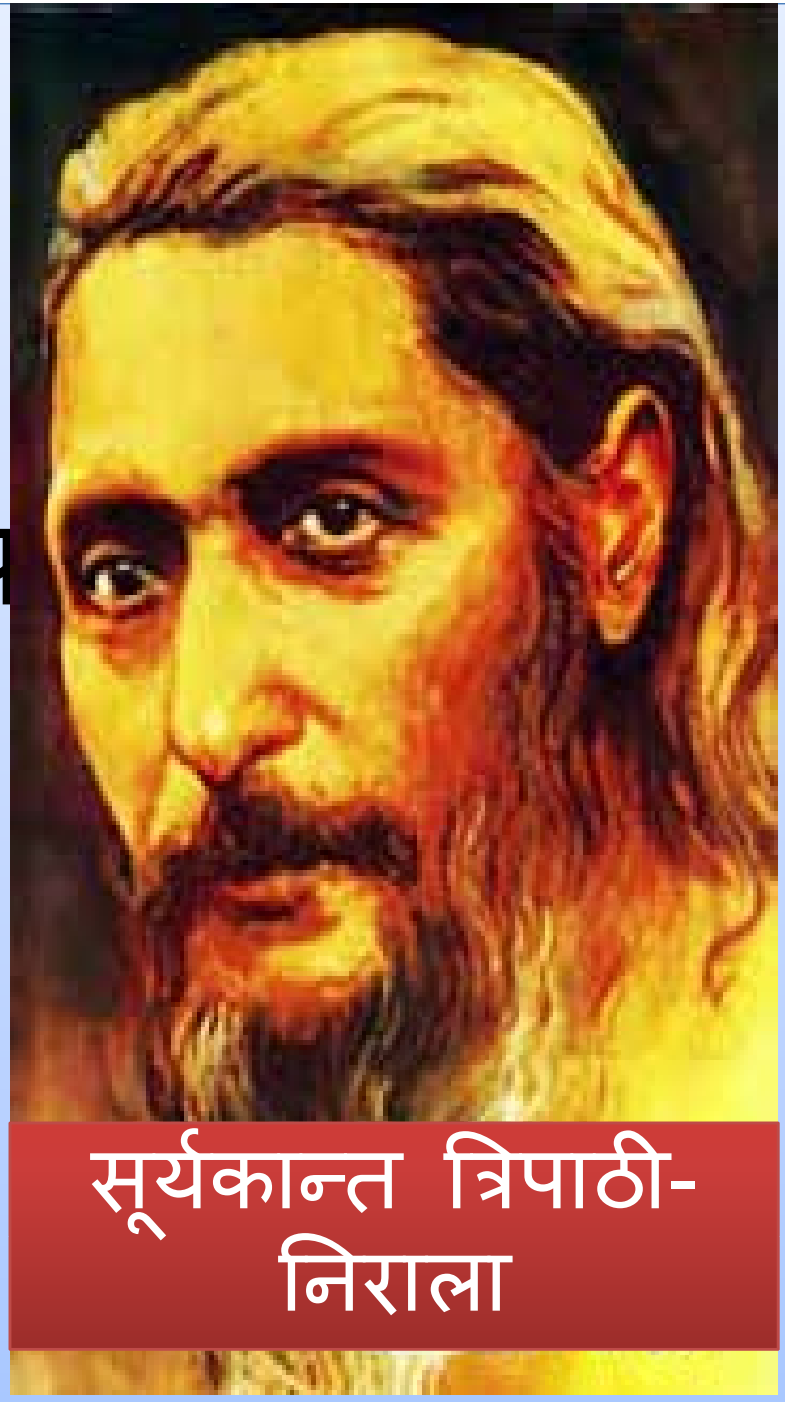

सूर्यकान्त त्रिपाठी-
निराला

वह तोड़ती पत्थर- निराला

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा -

'मैं तोड़ती पत्थर।'

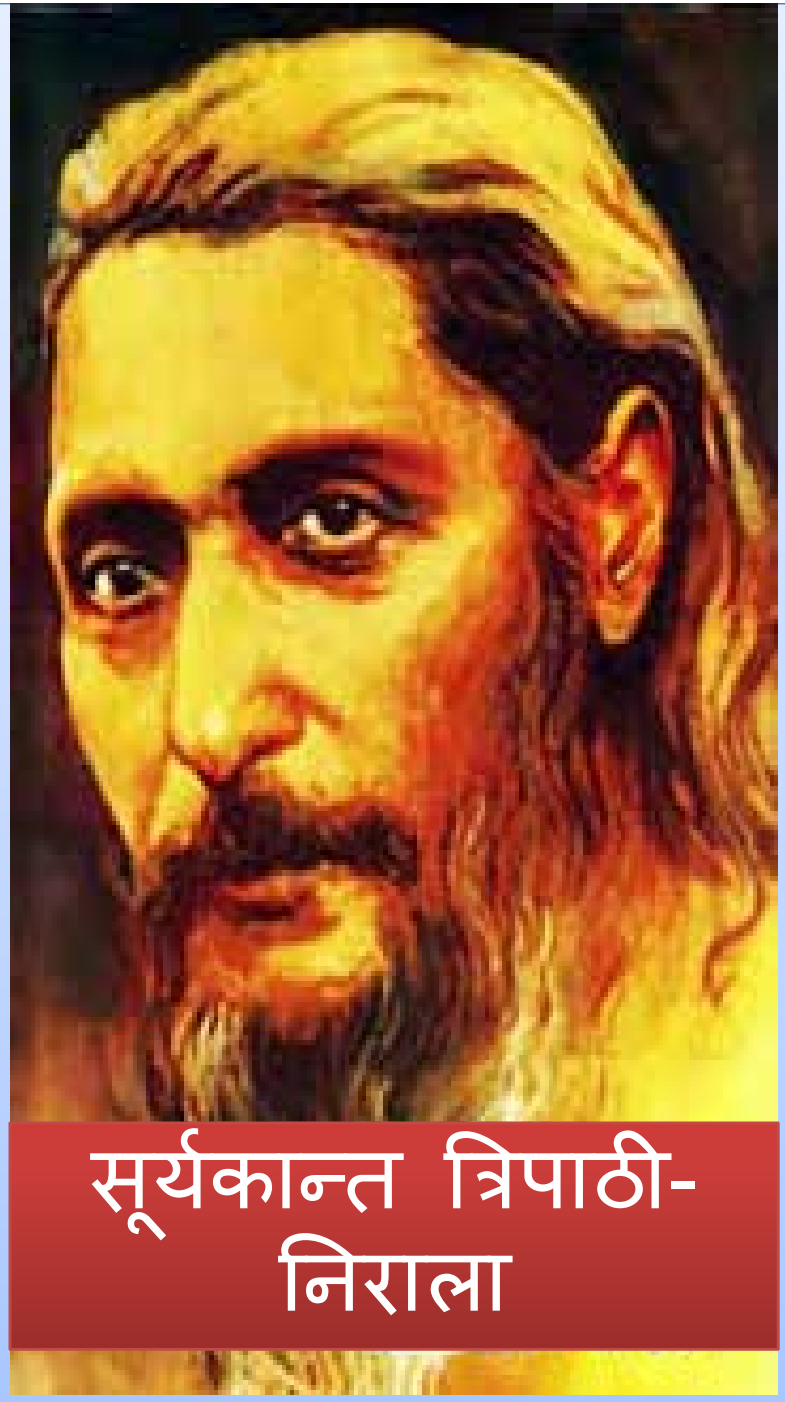

सूर्यकान्त त्रिपाठी- निराला

तोड़ती पत्थर-निराला

वह तोड़ती पत्थर;

देखा उसे मैंने
इलाहाबाद के पथ
पर-

वह तोड़ती पत्थर।

तोड़ती पत्थर-निराला

कोई न
छायादार
पेड़ वह जिसके
तले बैठी हुई
स्वीकार;

तोड़ती पत्थर-निराला

श्याम तन,
भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय,
कर्म-रत मन,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार
प्रहार :-

तोड़ती पत्थर-निराला

सामने तरू-
मालिका
अट्टालिका, प्राकार।

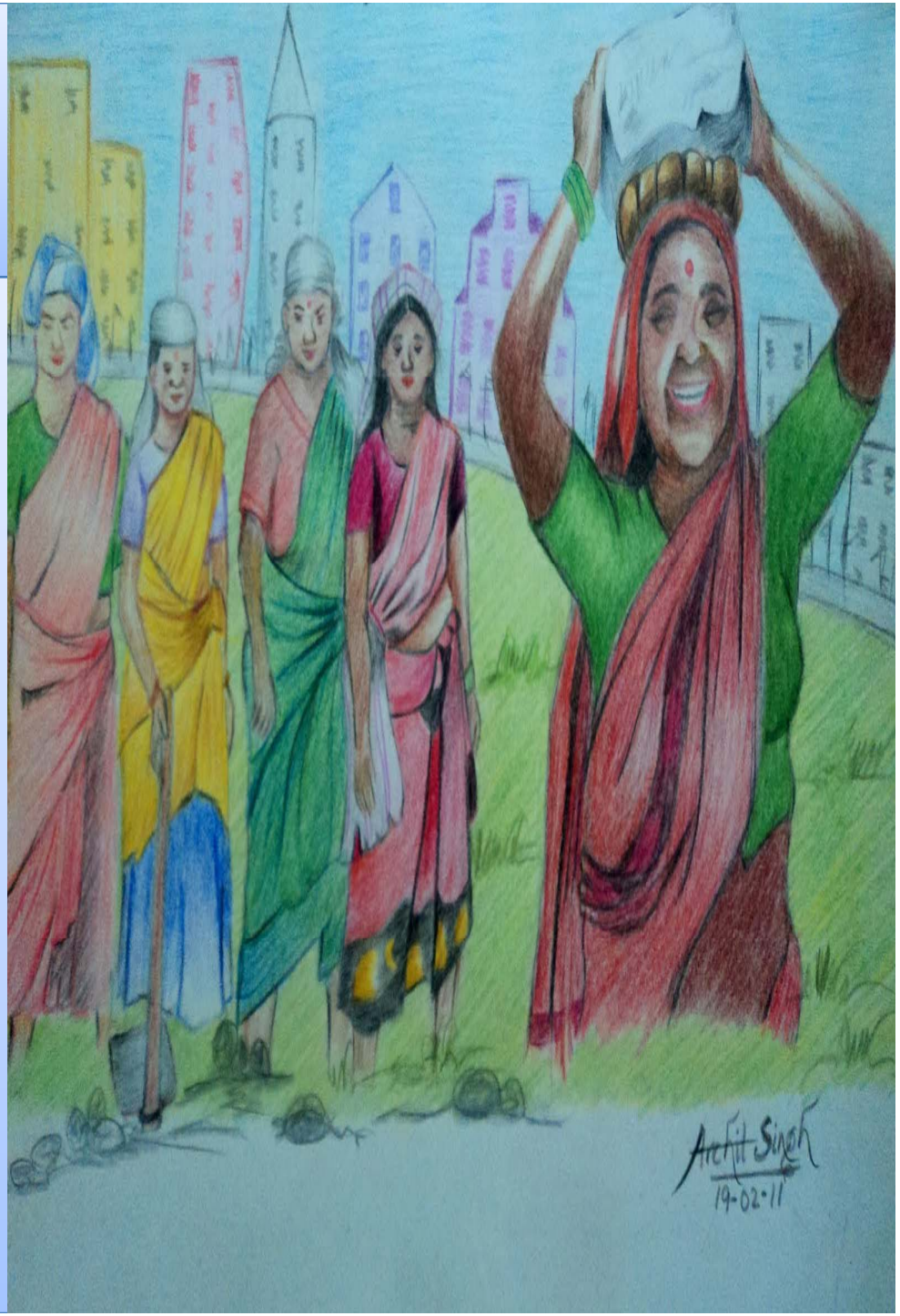

तोड़ती पत्थर-निराला

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता
रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई
भू,
गर्द चिनगी छा गयीं,
प्राय: हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर।

तोड़ती पत्थर-निराला

देखते देखा मुझे तो
एक बार
उस भवन की ओर
देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,

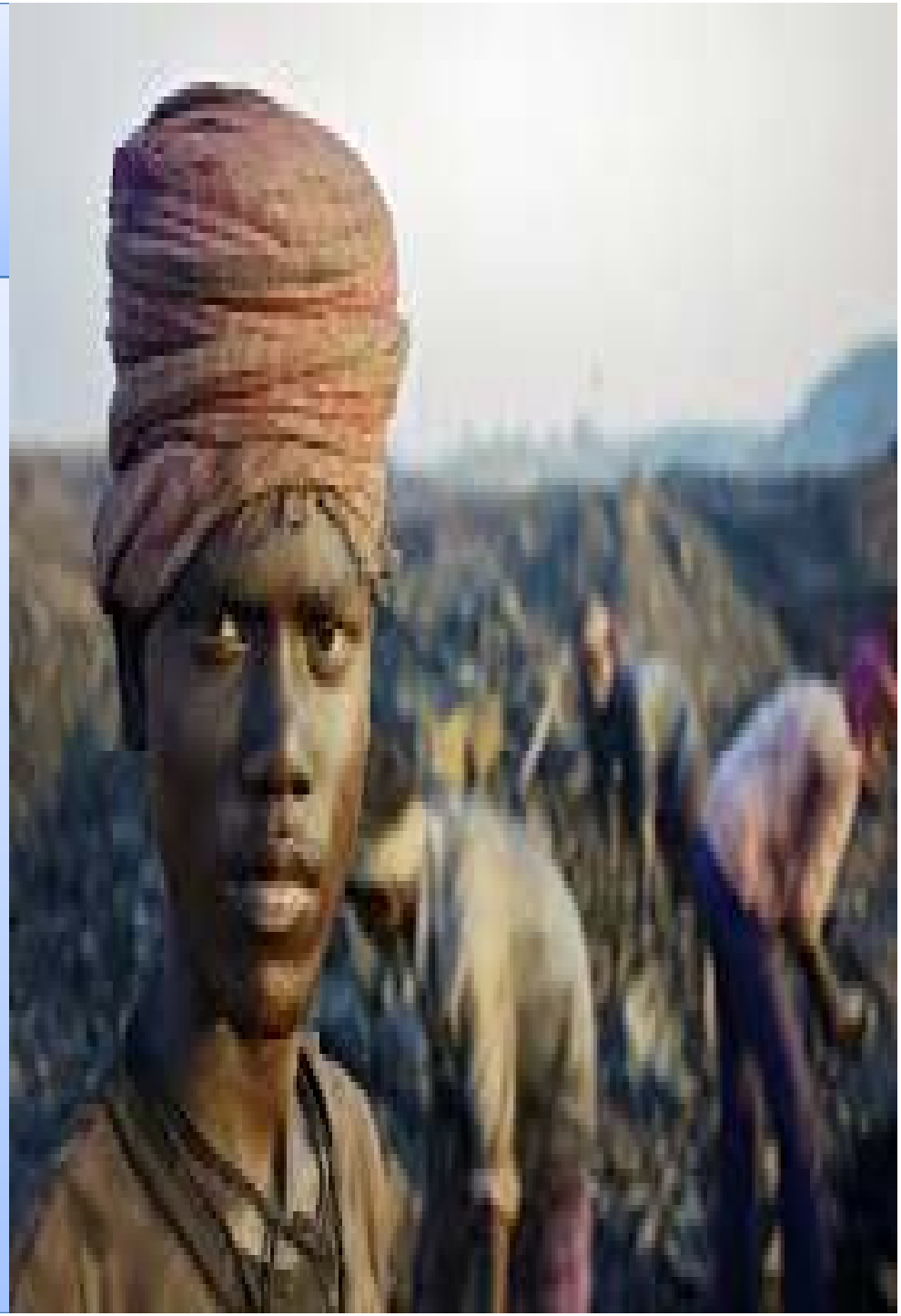

तोड़ती पत्थर-निराला

सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो
थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह
काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे
सीकर,
लीन होते कर्म में फिर
ज्यों कहा -
'मैं तोड़ती पत्थर।'